



हिन्दी सिनेमा 'श्री इंडियट्स' में कोड स्विचिंग और कोड मिक्सिंग का विश्लेषण

Kumar Madhav

Research Scholar, Department of Hindi, The English and Foreign Languages University Hyderabad 500007

[Email- kumarmadhav071@gmail.com](mailto:kumarmadhav071@gmail.com)

9652043290

जैसा कि हम जानते हैं कि जीवन में संदर्भ बदलता है तो परिस्थितियां भी बदलती हैं। बदलती हुई परिस्थिति के साथ हमारे जीवन की भाषा एवं इसकी शैली में भी बदलाव होता है। इस बदलाव को देखने और समझने के लिए किसी भी भाषा के साहित्य का प्रयोग किया जा सकता है। भाषा के बदलते संदर्भ को समझने के लिए इस प्रपत्र में कोड मिक्सिंग और कोड स्वीचिंग का विश्लेषण किया गया है। जिसके लिए चर्चित सिनेमा 'श्री इंडियट्स' का चयन किया गया है। किन्तु इस सिनेमा की भाषा शैली से पहले हिन्दी सिनेमा के बारे में मिनभि संक्षिप्त चर्चा करनी होगी।

हिंदी सिनेमा

हिंदी सिनेमा ने हिंदी भाषा की सीमा को विस्तृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अपनी स्थापना से लेकर वर्तमान समय तक कई विषयों पर फिल्मों का निर्माण हो चुका है। फिल्म की प्रासंगिकता दर्शकों की रुचि एवं विषय पर निर्भर करती है। पटकथा लेखन एक नई विधा है। साहित्यिक तत्व की तरह पटकथा लेखन में भी तत्व पाए जाते हैं। अपने स्थापना से लेकर वर्तमान समय तक की अवधि में सिनेमा ने अपना फलक बड़ा किया है जिसके कारण इसे स्वतंत्र विधा के रूप में भी पढ़ाया जाता है। किन्तु साहित्य और सिनेमा दोनों को जोड़कर भी देखा जाता है। यदि साहित्य को समाज का दर्पण माना जाता है तो इस आधार पर सिनेमा को भी समाज का दर्पण मान सकते हैं।

समाजभाषा विज्ञान के अंतर्गत समाज के परिप्रेक्ष्य में भाषा का अध्ययन किया जाता है। इसके अंतर्गत यह भी जानने का प्रयास किया जाता है कि समाज में भाषाई सम्प्रेषण कैसे होता है। कैसे भाषिक सामाजिक नियम बनाए जाते हैं। इसके अंतर्गत भाषा वैविध्य या विविधता पर अध्ययन किया जाता है। हिन्दी सिनेमा में भाषा वैविध्य देखने का अवसर मिलता है। साथ ही हिन्दी फिल्मों में भाषा और बोली का संगम होता है। दर्शकों के मस्तिष्क पर लंबे समय तक फिल्मों के डाइलॉग याद रहते हैं। फिल्म शोले, दामिनी, हेरा फेरी आदि इसके उदाहरण हैं।

नब्बे के दशक के बाद लिबरलाइजेशन, प्राइवेटाइजेशन और ग्लोबलाइजेशन या एलपीजी का प्रभाव सभी क्षेत्र में देखा गया है। इसलिए सिनेमा को भी इसी चर्च से देखना चाहिए। इस नीति का सिनेमा के तकनीकी पक्ष (कैमरामैन, फिल्म शूटिंग, लाइट सेट, डिजाइनिंग, मेकअप, वेशभूषा, स्टील फोटोग्राफी, साउंड रिकॉर्डिंग, डबिंग, वॉइस ओवर, साउन्ड, ऐडिटिंग एवं डिस्ट्रिब्यूशन) और कलापक्ष (कथा पटकथा, संवाद, स्क्रीन प्ले, गीत, संगीत, अभिनय नृत्य) में बदलाव देखा जा सकता है।

हिन्दी सिनेमा का बदलता स्वरूप

एक तरफ जहां हिन्दी भाषा ने अपने स्वरूप को विस्तृत किया वहीं दूसरी तरफ इसके विविध आयाम (धरवाहिक, शॉर्ट फिल्म, समानांतर फिल्म, संगीत) में बदलाव भी देखने को मिलता है। भाषा में हुए परिवर्तन को अवलोकित करने के लिए कई विधाओं की सहायता ली जा सकती है। किन्तु उसे कुछ पन्नों में समेकित करना चुनौतीपूर्ण कार्य है।

हिन्दी फिल्म श्री इंडियट्स (फिल्म निर्देशक राजकुमार हिरानी, निर्माता- विधु विनोद चोपड़ा, लेखक अभिजात जोशी और राजकुमार हिरानी, पटकथा- अभिजात जोशी, राजकुमार हिरानी, विधु विनोद चोपड़ा, अभिनेता-आमिर खान, करीना कपूर, आर माधवन, शर्मन जोशी, बोमन ईरानी, ओमी वैद्य, संगीतकार-शान्तनु मोइत्रा, छायाकार-सी०के० मुरलीधरन) को दर्शकों ने देखा एवं समीक्षा के सभी बिन्दु पर फिल्म की सराहना की गई। किन्तु इस सिनेमा को भाषा विज्ञान की दृष्टि से व्याख्यायित करना चाहिए।

शोध प्रपत्र लिखने से पहले जो प्रमुख प्रश्न उठते हैं। वह इस प्रकार है कि एक तरफ प्रसिद्ध साहित्यकार द्वारा लिखी गई रचनाओं पर केन्द्रित फिल्म को नहीं देखा जाता है। वहीं दूसरी तरफ श्री इंडियट्स अंग्रेजी से हिन्दी में अनूदित पुस्तक की कहानी के रूपांतरित रूप को लोगों ने बहुत पसंद किया। भूमंडलीकरण के कारण लोगों की शैली एवं शिक्षा व्यवस्था में जो भाषिक बदलाव हुआ है। उसे इस फिल्म के पटकथा में बहुत ही बारीकी रेखांकित किया है। साथ ही आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की भाषा में "जबकि प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिंब होता



है, तब यह निश्चित है कि जनता की चित्तवृत्ति के परिवर्तन के साथ-साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता चला जाता है। आदि से अंत तक इन्हीं चित्तवृत्तियों की परंपरा को परखते हुए साहित्य परंपरा के साथ उनका सामंजस्य दिखाना ही 'साहित्य का इतिहास' कहलाता है। जनता की चित्तवृत्ति बहुत कुछ राजनीतिक, सामाजिक, सांप्रदायिक तथा धार्मिक परिस्थिति के अनुसार होती है।¹

वह इस फिल्म की भाषा में उभरता हुआ नजर आता है। यही कारण है कि इस फिल्म के संवाद का लोगों की स्मृति पर लंबे समय तक प्रभाव रहा है। इसलिए सामाजिक भाषा विज्ञान के अंतर्गत फिल्म को विभिन्न स्तर पर समझने का प्रयास करेंगे।

उपन्यास फाइव पॉइंट समवन का फिल्म निर्माण के लिये चयन करना- जैसा कि हम सभी जानते हैं फिल्मों के निर्माण में पटकथा की भूमिका बहुत बड़ी होती है। फिल्म की प्रासंगिकता उसके पटकथा पर निर्भर करती है। इसलिए फिल्म निर्माता बहुत समय चर्चित उपन्यास, कहानी या साहित्यिक विधा को फिल्म बनाने का आधार बनाते हैं। सिनेमा बनाने में कई कलाओं का संगम होता है और फिल्म निर्माण के लिए अधिक धन राशि की आवश्यकता होती है। फिल्म निर्माता किसी तरह का आर्थिक खतरा नहीं लेना चाहता है। इसलिए लेखक पहले से चर्चित रचना का चयन करते हैं। इसी क्रम में उपन्यास फाइव पॉइंट समवन को देखना चाहिए। इस उपन्यास ने मध्य वर्ग के बीच अपना एक विशाल पाठक वर्ग तैयार किया और चर्चित हुआ। साथ ही यह कहानी पूंजीवादी शिक्षा व्यवस्था के करीब है। इस शिक्षा व्यवस्था के कारण समाज में उत्पन्न विसंगति को लेखक ने स्वानभूति के आधार पर लिखा है। इसलिए यह उपन्यास उन तमाम लोगों की कहानी का प्रतीक बन पाई जो इस व्यवस्था में पिसते हैं।

किन्तु कई बार लेखक द्वारा रचनाओं में ज्यादा कट छांट करने की अनुमति नहीं दी जाती है। जिसका परिणाम होता है कि अच्छी कहानी होने के बाद भी उस पर एक बेहतर फिल्म नहीं बन पाती है। इसके लिए प्रेमचंद की कहानियों का उदाहरण दिया जा सकता है। जैसे- कफन, पुस की रात नमक का दरोगा या उदय प्रकाश की कहानी मोहन दास आदि। फिल्म निर्माता के अधीन कहानी का नियंत्रण नहीं होता है।

सिनेमा श्री इंडियट्स में अनुवाद की भूमिका- न सिर्फ श्री इंडियट्स बल्कि किसी भी सिनेमा में अनुवाद की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। जैसे कॉलिंग सहमत हरिन्दर एस सिक्का द्वारा लिखित उपन्यास है जिस पर चर्चित फिल्म राजी बनी है। यहाँ भी उपन्यास को पटकथा के लिए रूपांतरित किया गया है। अनुवाद की भाषा में ऐसे कार्य को अंतर-प्रतिकात्मक अनुवाद (Inter-Semiotic translation) कहते हैं।

जिसका अर्थ हुआ कि भाषा एक प्रतिकात्मक व्यवस्था है। जिसके कारण प्रत्येक भाषा के कथ्य को भिन्न-भिन्न प्रतिकों से व्यक्त कर सकते हैं। जैसे-

तमस- भीष्म साहनी द्वारा बंटवारे पर लिखी गई कालजयी उपन्यास है गोविंद निहलानी ने चार घंटे से ज्यादा की फिल्म इसी नाम से बनाई। इस पर टीवी सीरियल भी बनाया गया।

शतरंज के खिलाड़ी- प्रेमचंद की कहानी शतरंज के खिलाड़ी पर बनी फिल्म 'द चेस प्लेयर्स' जिसे सत्यजीत रे ने बनाई थी। कहानी 1857 के ब्रिटिश भारत की पृष्ठभूमि पर केन्द्रित है। मुख्य भूमिका में संजीव कुमार और शबाना आजमी हैं।

तीसरी कसम- यह फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी 'मारे गए गुलफाम' पर आधारित है। इसे शैलेंद्र ने प्रोड्यूस किया था और बासु भट्टाचार्य ने निर्देशित किया था। यह फिल्म सफल नहीं हो पाई थी, जिसके कारण शैलेंद्र काफी हताश हो गए थे। ओमकारा शेक्सपियर के नॉवेल ओथेलो पर, टू स्टेट्स चेतन भगत के नॉवेल टू स्टेट्स पर आदि बनी हैं।

सिनेमा श्री इंडियट्स में हिंग्लिश या कोड मिक्सिंग (मिश्रण) कोड स्विचिंग (परिवर्तन) और की भूमिका

कोड स्विचिंग' और 'कोड मिक्सिंग' समाजशास्त्रीय अध्ययन की दो महत्वपूर्ण घटनाएँ हैं। जिसका अध्ययन भाषाविद और समाजशास्त्री द्वारा किया जात है। इसके अंतर्गत यह अवलोकित किया जाता है कि कैसे एक भाषा का कोई शब्द या वाक्यांश दूसरी भाषा के उच्चारण में सम्मिलित हो जाता है। इसका तात्पर्य उस स्थिति से भी है जहाँ एक वक्ता बातचीत के बीच में प्रारंभिक भाषा से दूसरी भाषा में स्थानांतरित हो जाता है। भाषा का चयन वक्ता के परिवेश पर निर्भर करता है। वैश्वीकरण और बाजार अर्थव्यवस्थाओं के उदारीकरण के दिनों में, एकभाषी स्थिति एक मिथक है, बल्कि बहुभाषावाद के दौर में समाज की ट्रेन चल रही है। उच्च तकनीकी उपकरणों की प्रगति के साथ इस स्थिति को और ऊंचाई तक ले जाया गया है। स्थानों के बीच की दूरी दिन-ब-दिन कम होती जा रही है। 'आइसोग्लॉस' यानी भाषाई सीमाएँ धुंधली होती जा रही हैं। इस संपर्क परिदृश्य में, एक भाषा का अन्य भाषाओं

¹ पृ सं – 5 हिन्दी साहित्य का इतिहास



की विभिन्न भाषाई विशेषताओं से प्रभावित होना निश्चित है। एक भाषा के कई शब्द, वाक्यांश दूसरी भाषा के देशी वक्ताओं द्वारा व्यापक रूप से उपयोग किए जाए जाते हैं।

सिनेमा श्री इंडियट्स में निम्न कलाकार हैं - आमिर खान- रणछोड़ दास छांछड़ और फुन्सूक वांगडू, करीना कपूर- प्रिया सहस्र बुद्धि, बोमन इरानी-वीरू सहस्र बुद्धि, आर माधवन- फरहान कुरैशी, ओमी वैद्य चतुर रामलिंगम, शरमन जोशी राजू रस्तोगी।

यह फ़िल्म मुख्य रूप से इंजीनियरिंग कॉलेज में पढ़ने वाले छात्रों की कहानी है। किंतु यह भी सत्य है कि संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल 22 भाषाओं में से किसी भी एक भाषा में इंजीनियरिंग की शिक्षा नहीं होती है। जिसके कारण इस फ़िल्म की भाषा पर अंग्रेजी का प्रभाव अधिक है। इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि इस फ़िल्म के संवाद शैली को भाषा विज्ञान की दृष्टि से समझा जाए जो इस प्रपत्र का मुख्य उद्देश्य है।

उच्च अध्ययन-अध्यापन में अंग्रेजी भाषा का महत्त्व- सिनेमा श्री इंडियट्स में इंजीनियरिंग शिक्षा व्यवस्था को दिखाया गया है। जबकि मेडिकल कॉलेज के बारे में चर्चा किया गया है। यह भी सत्य है कि ये दोनों क्षेत्र ऐसे हैं जहां अध्ययन-अध्यापन मुख्य रूप से अंग्रेजी भाषा में होता रहा है, जबकि भारतीय भाषाओं को इस क्षेत्र में उतना महत्त्व नहीं मिला है जितना मिलना चाहिए। विशेषकर हिन्दी भाषा को क्योंकि अंग्रेजी की तरह हिन्दी भी भारत की राजभाषा है। पात्रों के संवाद में अंग्रेजी के शब्दों का भरपूर प्रयोग हुआ है। जिसे आजकल हिंग्लिश के नाम से भी पुकारा जाता है। किन्तु भाषाविद इस शैली को कोड स्वीचिंग एवं कोड मिक्सिंग कहते हैं। किन्तु सिनेमा ने अन्य समस्या को भी दिखाया गया है। जो मुख्य रूप से उभर नहीं पाया वह है भाषा की समस्या। जिस पर अधिक विस्तृत से चर्चा होनी चाहिए थी। जो नहीं हो पाया है। भारत में उच्च शिक्षा की गुणवत्ता में खराब प्रदर्शन होने के कई कारण हो सकते हैं किन्तु उन कारणों में अंग्रेजी भाषा की बहुत बड़ी भूमिका रहती है। जिसके कारण लर्निंग गैप और लर्निंग आउटकम्स दोनों प्रभावित होते हैं। जिसका परिणाम होता है कि उच्च शिक्षण संस्थानों से बच्चों का ड्रॉपआउट रेट अधिक है उच्च शिक्षा क्षेत्र में सकल नामांकन अनुपात (Gross Enrolment Ratio- GER) बढ़ने के बदले घटता है।

किसी विशेष विषय पर चर्चा करने के लिए कोड मिक्सिंग एवं कोड स्वीचिंग-

भारत में उच्च शिक्षा व्यवस्था में यदि भारतीय साहित्य के क्षेत्र को छोड़ दिया जाए तो यह पाया जाता है कि मानविकी, विज्ञान विधि, प्रौद्योगिकी और आयुर्विज्ञान की शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी होता है। जिसके कारण कक्षा-कक्ष में शिक्षण के दौरान कोड स्वीचिंग और कोड मिक्सिंग का प्रभाव रहता है। शिक्षाविद यह तर्क देते हैं कि स्वतंत्रता के 70 वर्ष बाद भी भाषिक आधार पर शिक्षा क्षेत्र में गंभीर रूप से कार्य नहीं हुआ है। जिसके कारण संस्थान एवं विश्वविद्यालय में अंग्रेजी माध्यम प्रभावशाली है। साहित्य और सिनेमा दोनों पर ही परिवेश की संस्कृति का प्रभाव रहता है। यदि कोई चाहे तो दोनों विधा के माध्यम से सामाजिक सत्य को लोक के बीच स्थापित कर सकता है।

इसलिए श्री इंडियट सिनेमा में भी जब प्राध्यापक पोद्दार कक्षा में बोर्ड पर रोमन लिपि में machine लिखकर इसकी परिभाषा पूछते हैं तो रणछोड़ दास छांछड़ (आमिर खान) इसका उत्तर हिन्दी में देता है।

जैसे-

प्रोफेसर पोद्दार- What is a machine?

रणछोड़ दास छांछड़- एकचुअली सर बचपन से चाहता था कि इंजीनियरिंग कॉलेज में पढ़ रहा हूँ आज यहाँ बैठा हूँ बहुत मज़ा आ रहा है।

प्रोफेसर पोद्दार- बोलो, मशीन का डेफिनेशन बोलो।

रणछोड़ दास छांछड़- A machine is anything that reduces human effort.

प्रोफेसर पोद्दार- Will you please elaborate?

सर, हर वो चीज़ जो इंसान का काम आसान करे या वक्त बचाए वो मशीन है सर।

गर्मी लग रही है? बटन दबाया, हवा चालू फैन मशीन है सर। मीलों दूर आप अपने दोस्त के साथ बात कर सकते हैं टेलीफोन मशीन है सर। करोड़ों का हिसाब चुटकी में करता है कैलकुलेटर मशीन है सर एकचुअली हम मशीनों से धिरे हुए हैं। सर नीम की रेड से लेके पैंट की जीप तक सब मशीन है सर एक सेकंड में अब एक सेकंड में डाउन अपडाउन अपडाउन.....



सर वही तो बता रहा हूँ सर...

एजाम में ये सब लिखोगे,, ये मशीन है? अप डाउन अप डाउन अप डाउन इंडियट एनीबॉडी एल्स.....

चतुर रामलिंगम (ओमी वैद्य) Sir, machines are any combination of bodies so connected that their relative motions are constrained and by which means, force and motion may be transmitted and modified as a screw and its nut, or a lever arranged to turn about a fulcrum or a pulley about its pivot, etc., especially, a construction, more or less complex consisting of a combination of moving parts, or simple mechanical elements, as wheels, levers, cams, etc.

प्रोफेसर पोद्दार- क्या बात है perfect! please sit down!

प्रोफेसर पोद्दार-So, we were discussing the machine ... Why're you back?

रणछोड़ दास छांछड़ *“Instruments that record, analyses, summaries, organize, debate and explain information; that are illustrated, non-illustrated, hardbound, paperback, jacketed, non-jacketed; with foreword, introduction, table-of contents, index; that are intended for the enlightenment, understanding, enrichment, enhancement and education of the human brain through the sensory route of vision. Sometimes touch.*

कोड स्विचिंग और कोड मिक्सिंग की दूसरी शर्त किसी और के कथन को उद्धृत करना करना भी होता है जो उपरोक्त परिस्थिति में देखा गया है। जब प्रोफेसर के प्रश्न का उत्तर रणछोड़ दास छांछड़ ने अपनी भाषा में दिया तो कोड मिश्रण था जबकि किताब को उद्धृत किया कोड मिश्रण एवं कोड स्विचिंग दोनों था।

सिनेमा श्री इंडियट्स में हिंग्लिश या कोड स्वीचिंग-

अंतः वाक्य (Intra-Sentential) कोडस्विचिंग: एक ही वाक्य के अंतर्गत किया जाने वाला कोड परिवर्तन अंतः वाक्य परिवर्तन कहलाता है। भाषा विज्ञान रुचिकर होने के साथ बोझिल भी बन जाता है। यदि सामान्य उदाहरण नहीं दिया जाए। पहले कुछ सरल उदाहरण दिया जाएगा। तत्पश्चात फिल्म श्री इंडियट्स के उदाहरण दिए जायेंगे।

I love him क्योंकि वह खूबसूरत है।

वह पढ़ना नहीं चाहता है जबकि he is intelligent.

वह दौरना नहीं चाहता है जबकि he is a player.

उपरोक्त उदाहरण समझने के लिए था जिससे अंतः वाक्य में हो रहे कोड स्वीचिंग को समझा जा सके। अब सिनेमा की ओर वापस लौटते हैं और उस डाइलोग को याद कर सकते हैं जब कॉलेज का पहला दिन और डाइरेक्टर छात्रों को संबोधित कर रहे थे।

डाइलोग-

Don't forget कि हर साल ICE में हर साल चार लाख applications आते हैं। और उनमें से केवल 200 select होते हैं। और ये finished broken eggs, मेरे खुद के बेटे ने 3 साल apply किया था। Rejected. Every time. Remember, life is a race. अगर तेज नहीं भागोगे तो कोई तुम्हें कुचल कर निकल जाएगा।

अंतर वाक्य कोडस्विचिंग Inter- Sentential - इंटरसेंटेंशियल (या इंटर-सेंटेंशियल) कोडस्विचिंग- एक प्रकार की कोडस्विचिंग को संदर्भित करता है। जहां स्विचिंग के दौरान एक वाक्य अन्य भाषा में दूसरा वाक्य अन्य भाषा में होता है। वाक्यों का संदर्भ जुड़ा होता है किन्तु व्याकरणिक रूप से वाक्य स्वतंत्र होता है।

कल हम फ्रांस के लिए फ्लाइट लेंगे। we will have lot of fun there.

हमलोग रेलवे स्टेशन पर रुकते हैं। Tomorrow we can catch the first train for Patna.



Salt water is a great conductor of electricity. 8th -grade-physics. में हमने पढ़ा था साले ने apply किया।

Welcome idiots! मदिरा पियोगे?

यहाँ डाइलोग का पहला वाक्य दूसरे वाक्य से स्वतंत्र है। इसलिए अंतर वाक्य कोडस्विचिंग (Inter-Sentential) के अंतर्गत आएगा। साथ ही भी देखना चाहिए कि पहला वाक्य अंग्रेजी भाषा का पूर्ण वाक्य है। जबकि दूसरे वाक्य की शब्दावली में अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग किया गया है। जबकि भाषिक संरचना हिन्दी भाषा की है। इसलिए यहाँ कोड मिक्सिंग हुआ।

Extra-Sentential या Tag Switching: यह या तो एक शब्द या टैग वाक्यांश (या दोनों) को एक भाषा से दूसरी भाषा में बदलना जैसे होता है। इंटर-सेंटेंशियल स्विच में यह करना आम है। वक्ता एक भाषा के टैग को दूसरी भाषा के उच्चारण में सम्मिलित करता है।

जैसे- **Oh no** कल उससे मिलने जाना है।

Oh yes मुझे सीट मिल गई।

डाइलोग-

Excuse me Sir, please sit down...

Captain, there's a medical emergency. A passenger has just fallen down in the aisle....

Delhi, Air India 101 returning due to medical emergency.....

नहीं मैं बिल्कुल ठीक हूँ। **Thank you**

In that case, डैड को फोन लगाओ।

Just one sec, please, one sec, please.

सिनेमा श्री इंडियट्स में कोड मिक्सिंग -

वाक्य पदबंध (Lexical level) के स्तर पर – इस स्तर पर वक्ता अपने कथ्य को बढ़ाने के लिए कोड मिक्सिंग करता है। यह अनायास करता है। उसकी जब सुध उसे लगती है तो उसे अनुदीत करने का प्रयास करता है। जो अनायास न होकर जोर देकर कहना होता है।

I love **जलेबी**, मुझे **chocolate** पसंद है।

सिनेमा श्री इंडियट्स में कोड मिक्सिंग के उदाहरण-

मैं चला जाऊंगा। **accelerator** पर थोड़ा load दे काके?

चतुर का फोन था। **रिमेम्बर हिम?**

कौन **साइलेंसर?**

यार मैं आके बात करता हूँ। **bye**

अरे होटल जाएंगे काके लेकिन Imperial College of Engineering होके।

OK Sir!

डाइलोग



School के लिए fees थोड़ी लगती है। **uniform** लगती है।

Machine का definition बोलो?

डायलोग

Exam ये सब लिखोगे ये मशीन है? **अप डाउन अप डाउन** idiot anybody else

क्या बात है। **perfect sit down.....**

पदविज्ञान/ रूप विज्ञान (morphology) स्वरविज्ञान के स्तर पर Phonological (pronunciation) level – जैसा कि हम सभी जानते हैं कि सिनेमा जहां पहले मूक विधा के अंतर्गत था। जिसमें सिर्फ चल चित्रों का प्रदर्शन होता था। बाद के दिनों में ध्वनि स्तर पर कार्य हुआ। जिसके कारण सिनेमा को टॉकीज के नाम से भी संबोधित किया जाने लगा। छोटे शहरों में तो आज भी सिनेमाघरों के नाम के बाद टॉकीज का प्रयोग होता है।

किन्तु नब्बे के दशक बाद सिनेमा में अँग्रेजी के साथ भारतीय भाषा में कार्य हुआ। जिसका परिणाम हुआ सिनेमा के भाषा में मोर्फोलॉजिकल एवं फोनोलॉजिकल स्तर पर बहुत बार कोड मिक्सिंग देखने को मिलता है।

स्वरविज्ञान में मुख्य रूप से ध्वनि के स्तर पर बदलाव देखने को मिलता है –

-station, i-school, i-scale, etc यह बहुत ही ध्यान से सुनने पर पता चलता है। सिनेमा में ऐसी ध्वनियाँ सुनाई देती है।

जैसे- एयरपोर्ट से बाहर जाने पर फरहान और ड्राइवर के बीच का संवाद

रूप विज्ञान के आधार पर कोडमिक्सिंग-

राजू का घर 1950 की ब्लैक अँड व्हाइट **फिल्मों** की याद दिलाता था।

डाइलोग

चतुर: यू स्वाइन्स। मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़े है?

चतुर- हंसो मेरे **मैथड्स** पे हंसो। एक दिन इन्हीं **मैथड्स** से मैं सकसैसफुल बनके दिखाऊंगा। फिर एण्ड तुम रोओगे।

पिया ऐसी एक्सपैन्सिव **गिफ्ट्स** की मुझे आदत नहीं है सुहासा।

सुहास- आदत डाल लो पिया। यू आर गोना बी सुहास टंडनस वाइफ।

सुहास नॉव दैट वॉज अ लिमिटेड एडिशन वॉच यू जस्ट लौस्ट। फ्री में मिली तो बस !

अब डिनर पे पहनना अपनी वो तुम्हारी एटीन्थ सैनच्युरी की घड़ी!

ऐसे डाइलोग में अँग्रेजी के शब्दों का तो मिक्सिंग हुआ ही है साथ ही वहाँ पर अँग्रेजी के व्याकरण के नियम का भी प्रयोग हुआ है। क्योंकि हिन्दी भाषा में बहुवचन बनाने के अलग नियम है जबकि अँग्रेजी में अलग नियम है।

गिफ्ट्स, मैथड्स आदि,,,, यहाँ आप संज्ञा के साथ अँग्रेजी में किस तरह एक वचन को बहुवचन बनाया गया है उसी नियम को लागू किया गया है। इसी तरह भौगलिक वातावरण का यदि अभिनेता पर प्रवाह नहीं पड़ता है तो इसका अर्थ हुआ की फिल्म निदेशक को उस स्थान का भाषिक शब्दवाली के ज्ञान का अभाव है।

संकर शब्द या हाइब्रिड शब्द- वे शब्द होते हैं जिसमें दो भाषा के शब्दों को जोड़ दिया जाए- जैसे रेलगाड़ी, रेल यहाँ अँग्रेजी से है तो गाड़ी हिन्दी से है। उसी तरह फिल्म में डाइरेक्टर साहब शब्द का प्रयोग हुआ यह भी उदाहरण बन सकता है।



क्या कोड स्विचिंग और कोड मिक्सिंग में कोई अंतर नहीं है-

यहां पाया जाता है कि वक्ता द्वारा दोनों में हाइब्रिड शब्द बनाना या वाक्यांशों, खंडों के भीतर दो या दो से अधिक भाषा के बीच स्विच करना या एक पूर्ण वाक्य से दूसरे में स्विच करना शामिल किया जाता है। भाषाविद द्वारा यह भी अवलोकित किया गया है कि कुछ लोग "कोड मिक्सिंग" और "कोड स्विचिंग" शब्दों का परस्पर उपयोग करते हैं। इसके कई कारण हैं।

कोड मिक्सिंग" और "कोड स्विचिंग के अंतर को समझने के लिए वक्ता का जन्म स्थान, उसकी शिक्षा, उसका समाज उसका कार्यप्रणाली आदि को समझना बहुत महत्वपूर्ण है। कोड मिक्सिंग के संदर्भ में यह देखा जाता है कि वक्ता अपनी वाणी को आगे बढ़ाने के लिए कोड मिक्सिंग का प्रयोग करता है। जिसमें जिसमें मुख्य रूप से स्रोत भाषा में शब्दों का अभाव एवं प्रचलन नहीं होता है।

कुछ विद्वान इसे भाषा की आवश्यकता मानते हैं बजाय कोड मिक्सिंग" और "कोड स्विचिंग कहना उचित नहीं समझते हैं।

इस पूरे डायलॉग के माध्यम से समझेंगे कैसे एक ही समय में कोड स्विचिंग और कोड मिक्सिंग के सभी प्रक्रिया चलती है। इसलिए सिनेमा या उपन्यास के संदर्भ में बाँट का विश्लेषण करना चुनौती भरा होता है। यह भी कहना अतिशयोक्ति होगा कि यह असंभव है। इसलिए इस डायलॉग के कोष्ठक में दिया गया शब्द यह लघु वाक्य उसका विश्लेषण है।

Don't forget (Extra-Sentential या Tag Switching) कि हर साल ICE में हर साल चार लाख applications (वाक्य पदबंध (Lexical level) के स्तर पर आते हैं। और उनमें से केवल 200 select होते हैं। और ये finished broken eggs, मेरे खुद के बेटे ने 3 साल अप्लाई किया था। Rejected. Every time. Remember, life is a race. अगर तेज नहीं भागोगे तो कोई तुम्हें कुचल कर निकल जाएगा। (अंतर वाक्य कोडस्विचिंग Inter- Sentential - इंटरसेंटेंशियल (या इंटर-सेंटेंशियल) कोडस्विचिंग)

कोड मिक्सिंग के कारण-

भारत बहुभाषी देश है। लोगों का शिक्षा, रोजगार, पर्यटन आदि के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान जाना आना लगा रहता है। संचार प्रौद्योगिकी एवं डिजिटल प्लैटफॉर्म के कारण भी भाषाओं का एक दूसरे संपर्क बना हुआ है। इसलिए भाषाओं के बीच कोड मिक्सिंग होना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। पहले के समय में लोगों की यह दुनिया सीमित थी। इसलिए उनकी भाषा भी दूसरे के भाषा से उतनी प्रभावित नहीं थी। रामस्वरूप चतुर्वेदी का मत है - "द्वितीय महायुद्ध को ही यदि फिर विभाजक-रेखा मानें तो उससे पूर्व भारत का औसत मनुष्य अपने समूचे जीवन-काल में सौ-दो सौ व्यक्तियों से मिल पाता था। पर संचार के प्रत्यक्ष (रेल, मोटर, जहाज) और अप्रत्यक्ष (डाक-तार, टेलीफोन, समाचार-पत्र, सिनेमा, रेडियो, दूरदर्शन) साधनों की सहायता से अब उसके परिचय और भावात्मक संसक्ति का क्षेत्र सौ प्रतिशत बढ़ गया है। उन्नत देशों में तो इस परिचय और संसक्ति का विस्तार और तेजी से बढ़ा है। चेतना-केन्द्रों का यह तीव्र गति से बढ़ता संपर्क मानवीय संवेदनशीलता पर बहुत बड़ा दबाव हो रहा है, जिससे अनुभूति का क्षरण होता है और स्नायविक रोगों की बढ़ोतरी। कुल मिला कर अनुभूति के क्षेत्र में सनसनी का प्रवेश तेजी से बढ़ता जा रहा है।"² किन्तु इसके अतिरिक्त भी कई उदाहरण हैं-

किसी बात को ज़ोर देकर कहना- वक्ता जब अपनी बात को प्रभावशीलता के साथ सामने वाले को कहना चाहता है तो ऐसे परिस्थिति में वह कोड स्विचिंग और कोड मिक्सिंग करता है। श्री इंडियट सिनेमा में भी जब इंस्टीट्यूट के डायरेक्टर बॉमन इरानी-वीरू सहस्र बुद्धि छात्रों को संबोधित करते हैं, तो स्थान पर कोड मिक्सिंग एवं कोड स्विचिंग करते हैं-

Don't forget कि हर साल ICE में चार लाख applications आते हैं और उसमें से सिर्फ 200 select होती है। You! और ये Finished. Broken eggs. मेरे खुद के बेटे ने 3 साल अप्लाई किया था। Rejected. Every time. Remember, life is a race. अगर तेज नहीं भागोगे तो तुम्हें कोई कुचलकर आगे भाग जाएगा।

Let me tell you a very interesting story. ये astronaut's pen है। स्पेस में Fountain pens और ball pen कुछ नहीं चलता है। तो लाखों डॉलर खर्च करने के बाद scientist ने ऐसा पेन ईजाद किया। जिससे कोई भी angle कोई भी temperature zero gravity में लिख सकते हैं।

Good. Put your hands down.

Shall I post it on the notice board? Hands

² डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी; हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास; पृ.193



down

One day, when I was a student, the Director of our institute called me. He said, “Virus Sahastrabuddhe.” I said, “Yes Sir” “Come here!” मैं डर गया. He showed me this pen. He said, “This is a symbol of excellence. I give it to you. और जिस दिन तुम्हें तुम्हारे जैसा कोई extraordinary student मिले, तो ये पेन उसे पास कर देना ”

बत्तीस साल से Virus Sahastrabuddhe is waiting for that student. But no luck. Anyone here, who'll strive to win this pen?

किसी विशेष विषय पर बात करना-सामान्यतः किसी भी भाषा का विकास तीन चरणों पर होता है। जिसके कारण भाषा के मुख्य रूप से तीन भागों में विभाजित करके देखना चाहिए।

- सामान्य भाषा
- साहित्यिक भाषा
- प्रयोजनमूलक भाषा

स्वतंत्रता से पहले हिंदी भाषा मुख्य रूप से क्षेत्र विशेष के जनसमूह के बीच बोली जाने वाली भाषा थी। किंतु आधुनिक काल के उत्थान के बाद से इस भाषा में अपना विस्तार किया जिसके कारण पहले सामान्य भाषा और साहित्यिक भाषा में तो हिंदी का विस्तार हुआ और फिर प्रयोजनमूलक हिन्दी के क्षेत्र नहीं हुआ। इसलिए प्रयोजनमूलक क्षेत्र में अभी भी बहुत कार्य करने की आवश्यकता है। यही कारण है कि स्वतंत्रता के 70 साल बाद भी इंजीनियरिंग और मेडिकल की शिक्षा हिंदी भाषा में नहीं होती है। इस फिल्म का विषय भी से प्रौद्योगिकी शिक्षा है या कहें उच्च शिक्षा है जिस कारण फिल्म डायरेक्टर को पात्रों के संवाद को आगे बढ़ाने के लिए अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग करना पड़ता है इस फिल्म में न सिर्फ डायलॉग के रूप में हिंदी और अंग्रेजी का प्रयोग हुआ है बल्कि गानों में भी अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग हुआ है-

सारी उम्र हम
मर मर के जी लिए
एक पल तो अब हमें
जीने दो जीने दो
सारी उम्र हम
मर मर के जी लिए
एक पल तो अब हमें
जीने दो जीने दो
गिव मी सम सनशाइन
गिव मी सम रेन
गिव मी ऐनेदर चान्स
आई वाना ग्रो अप वन्स अगेन
गिव मी सम सनशाइन
गिव मी सम रेन
गिव मी ऐनेदर चान्स आई वाना ग्रो अप वनूस अगेन.....

किसी और को उद्धृत करना- जब किसी को उद्धृत किया जाता है तो वक्ता अपनी भाषा शैली को बदलता है। श्री इंडियन फिल्म में भी यह पाया गया है। जब मशीन का उदाहरण दिया जाता है इस दौरान आमिर खान पहले हिन्दी भाषा में मशीन का उदाहरण प्रस्तुत करता है। किंतु प्रोफेसर के द्वारा इस परिभाषा को स्वीकृति नहीं मिलती है। इसलिए किताब में दिए गए उदाहरण को उद्धृत किया जात है जिसके लिए अंग्रेजी भाषा का प्रोग यहाँ किया जात है-

चतुर- Sir, machines are any combination of bodies so connected that their relative motions are constrained and by which means, force and motion may be transmitted and modified as a screw and its nut, or a lever arranged to turn about a



fulcrum or a pulley about its pivot, etc., especially, a construction, more or less complex consisting of a combination of moving parts, or simple mechanical elements, as wheels, levers, cams, etc.

RANCHO

Instruments that record, analyses, summarize, organize, debate and explain information; that are illustrated, non-illustrated, hardbound, paperback, jacketed, non-jacketed; with foreword, introduction, table-of contents, index; that are intended for the enlightenment, understanding, enrichment, enhancement and education of the human brain through the sensory route of vision. Sometimes touch.

सिनेमा के दो पात्रों चतुर और रांचों ने किताब को उद्धृत करते हुए मशीन को परिभाषित किया। हम सभी जानते हैं कि इंजीनियरिंग कॉलेज की शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी है। इसलिए यहां अंग्रेजी भाषा का प्रयोग हुआ है।

वाक्य को जोड़ने के लिए- इंटरजेक्शन ऐसे शब्द या भाव हैं, जिन्हें व्यक्त करने के लिए वाक्य में डाला जाता है। आश्चर्य, मजबूत भावना, या ध्यान आकर्षित करने के लिए। इंटरजेक्शन एक संक्षिप्त विस्मयादिबोधक है जैसे: अरे!, अरे!, देखो!, आदि। उनका कोई व्याकरणिक मूल्य नहीं है, लेकिन वक्ता इसका उपयोग करता है। बहुत बार, आमतौर पर लिखित रूप से बोलने में अधिक। द्विभाषी या बहुभाषी लोगों के बीच कोड स्वीचिंग या कोड मिक्सिंग भाषा परिवर्तन और भाषा मिश्रण वाक्यों में अंतःक्षेपण के उपयोग के उदाहरण निम्नलिखित हैं:-

किताबें सर! बुक्स!...

इन दैट केस आपके डैड को फोन लगाओ प्लीज.....

सर आप एक दफा देख तो लीजिए सर प्लीज.....

गुड न्यूज़ है सर ना पुलिस को पता चला ना जाए के बाप को सब सोच रहे हैं सुसाइड है सर.....

इस प्रकार से हिन्दी सिनेम के अंतर्गत कोड मिक्सिंग को देखते है।

निष्कर्ष-

कोड मिक्सिंग एवं कोड स्वीचिंग को समझने के लिए अन्य स्रोत की सहायता लेने की तुलना में सिनेमा को उद्धृत कारण बेहतर था। इसका प्रमुख कारण है यहाँ किसी बात को कहने के लिए चित्र, संगीत, लाइट, ध्वनि की सहायता से भावनाओं को व्यक्त किया जाता है। जिसका प्रभाव दर्शक के मनोदशा पर लंबे समय तक रहता है।

इस प्रकार इस प्रपत्र में श्री इंडियट्स सिनेमा के माध्यम से हिन्दी हिन्दी सिनेमा का बदलता स्वरूप, सिनेमा श्री इंडियट्स में अनुवाद की भूमिका, सिनेमा श्री इंडियट्स में हिंग्लिश या कोड स्वीचिंग और मिक्सिंग की भूमिका, कोड स्वीचिंग और मिक्सिंग, सिनेमा श्री इंडियट्स में हिंग्लिश या कोड स्वीचिंग और कोड मिक्सिंग, कोड मिक्सिंग के कारण, उच्च अध्ययन-अध्यापन में अंग्रेजी भाषा का महत्त्व, कोड स्वीचिंग एवं मिक्सिंग के अंतर्गत पदविज्ञान/रूप विज्ञान (morphology) स्वरविज्ञान के स्तर पर Phonological (pronunciation) level, किसी और को उद्धृत करना- वाक्य को जोड़ने के लिए, किसी बात को जोर देकर कहना, किसी विशेष विषय पर बात करना और सबसे महत्वपूर्ण हिन्दी फिल्म श्री इंडियट्स के सभी सदस्य: निर्देशक राजकुमार हिरानी, निर्माता- विधु विनोद चोपड़ा, लेखक अभिजात जोशी और राजकुमार हिरानी, पटकथा-अभिजात जोशी, राजकुमार हिरानी, विधु विनोद चोपड़ा, अभिनेता-आमिर खान, करीना कपूर, आर माधवन, शर्मन जोशी, बोमन ईरानी, ओमी वैद्य, संगीतकार-शान्तनु मोइत्रा, छायाकार-सी०के० मुरलीधरन की भाषा शैली का सिनेमा पर प्रभाव मुख्य रूप से दिखाई पड़ता है। ये हिन्दी सिनेमा के लिए कार्य तो करते हैं किन्तु इनकी भाषा शैली में अंग्रेजी का प्रभाव अधिक रहता है। ये हिन्दी को देवनागरी लिपि के बजाय रोमन लिपि में पढ़ते हैं। साहित्य से इनका घनिष्ठ संबंध नहीं है। सिनेमा में तो डायलॉग भी कोई ओर देता है ये तो बस अपने जिह्वा को ऊपर नीचे बाएँ दाएँ करते हैं। किन्तु खूबी यह कि प्रस्तुतीकरण बहुत बढ़िया होता है जिसके कारण इस प्रकार की भाषा लोगों को आकर्षित करती है।

कई बिन्दु ऐसे भी रह गए जिस पर अधिक विस्तार से बात हो सकती है। हिन्दी भाषा में अभी कोड स्वीचिंग एवं मिक्सिंग पर अधिक पुस्तक उपलब्ध नहीं है। इस लिए इसके सिद्धान्त को लिखने के लिए भी सामान्य साहित्यिक इतिहास की सहायता ली गई। पुनः सिनेमा के भाषाई संदर्भ में आचार्य रामचंद्रा शुक्ल का यह कथन अधिक सटीक बैठता है कि जबकि प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिंब होता है, तब



यह निश्चित है कि जनता की चित्तवृत्ति के परिवर्तन के साथ-साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता चला जाता है। आदि से अंत तक इन्हीं चित्तवृत्तियों की परंपरा को परखते हुए साहित्य परंपरा के साथ उनका सामंजस्य दिखाना ही 'साहित्य का इतिहास' कहलाता है। जनता की चित्तवृत्ति बहुत कुछ राजनीतिक, सामाजिक, सांप्रदायिक तथा धार्मिक परिस्थिति के अनुसार होती है। साहित्य की तरह सिनेमा के दर्शकों पर भी इस तरह का प्रभाव देखा जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. अभय कुमार दुबे (सं.); विजय बहादुर सिंह एवं योगेंद्र यादव (शृंखला संपादक); भारत का भूमंडलीकरण; वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली (संस्करण - 2008)
2. टी.डी.एस. आलोक; इलेक्ट्रॉनिक मीडिया; अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली (संस्करण - 2009)
3. राजेंद्र पांडे; पटकथा कैसे लिखें; वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली (प्रथम संस्करण - 2006, आवृत्ति-2009)
4. जगदीश्वर चतुर्वेदी; हाइपरटेक्स्ट वर्चुअल रियलिटी और इंटरनेट; अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली (प्रथम संस्करण - 2006)
5. रामचंद्र शुक्ल; हिन्दी साहित्य का इतिहास; मलिक एंड कंपनी; जयपुर (संस्करण - 2009)
6. रामस्वरूप चतुर्वेदी; हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद (तेइसवाँ संस्करण - 2010)
7. Kachru, Braj B: Toward Structuring Code-Mixing an Indian Perspective.
8. Diptakirti Chaudhuri The Story of Hindi Cinema's Greatest Screenwriter Penguin Books (PDF)
9. Jyotika Virdi: The Cinematic Imagination Indian Popular Films as Social History; Rutgers University Press New Brunswick, New Jersey, and London (PDF)
10. <https://www.youtube.com/watch?v=pzNHnzupGSS>
11. <http://www.hindisamay.com/>